उपसंहार

सम्पूर्ण पृथ्वी महाद्वीपों एवं महासागरों के योग से बनी है। पृथ्वी की भूपर्पटी का 71 प्रतिशत भाग महासागरों तथा 29 प्रतिशत भाग महाद्वीपों से घिरा हुआ है। कुछ भौगोलिक वैज्ञानिकों के अनुसार महाद्वीप तथा महासागर विभिन्न प्लेट के ऊपर स्थित है। जब यह प्लेट प्रवाहित होती है, तो उनके साथ महाद्वीप तथा महासागरीय तट भी विस्थापित होते हैं।विश्व में कुल सात महाद्वीपों तथा महासागरों का रूप प्राप्त हुआ है। विश्व के सात महाद्वीप एशिया, अफीका, उत्तरी अमेरिका, दक्षिणी अमेरिका, अन्टार्कटिका, यूरोप, आस्ट्रेलिया है। एशिया या जम्बूद्वीप आकार और जनसंख्या दोनों ही दृष्टि से विश्व का सबसे बड़ा महाद्वीप है। यह उत्तरी गोलार्द्ध में स्थित है। एशिया और यूरोप को मिलाकर कभी-कभी यूरेशिया भी कहा जाता है क्योंकि पश्चिम में यूरोप से अपनी सीमाएँ मिलाती हैं। एशिया महाद्वीप में कुल 50 देश शामिल हैं जिनमें भारत देश भी शामिल है। एशिया के दक्षिण भाग में एक उपमहाद्वीप स्थित है। इस उपमहाद्वीप को दक्षिण एशिया भी कहते हैं। भूवैज्ञानिकों के अनुसार इस उपमहाद्वीप का अधिकांश भाग भारतीय प्रस्तर पर स्थित है। जो आमतौर पर भारतीय उपमहाद्वीप को संदर्भित करता है, जिसमें भारत, पाकिस्तान, बांग्लादेश, नेपाल, भूटान, मालद्वीव और श्रीलंका शामिल हैं।

किसी महाद्वीप का एक बड़ा भाग जो भौगोलिक व् सांस्कृतिक दृष्टि से महाद्वीप के अन्य भागों से अलग पहचान रखता है और उसके भू-भाग में एकरूपता हो, वह उपमहाद्वीप कहलाता है। भारतीय उपमहाद्वीप में शामिल भारत देश में आधुनिककाल का समय 19 वीं शताब्दी की प्रारंभ से माना जाता है। कुछ इतिहासकारों के अनुसार मुगलकाल के पतन के साथ ही आधुनिक इतिहास की शुरूआत मानी जाती है। वास्तव में भारत शुरू से सोने की चिड़िया के रूप में जाना था। परन्तु कई वर्षों तक चलने वाले

राजनैतिक गतिविधियों का परिणाम यह हुआ कि भारत की सत्ता भारतीय शासकों के हाथ से निकालकर कब विदेशियों के हाथ में पहुँच गयी इसका अंदाजा इतिहास के विश्लेषण से लगाया गया। इसी दौरान भारत को अंग्रेजों के गुलामी से निकालने के लिए कई भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन हुए। बीसवीं शताब्दी के प्रारम्भ से ही अंग्रेजी शासन से स्वतंत्रता प्राप्ति के लिए संघर्ष प्रारंभ हो गए। इस संघर्ष के परिणामस्वरूप 15 अगस्त, 1947 को भारत ने अंग्रेजी शासन से स्वतंत्रता प्राप्त की, लेकिन यह स्वतंत्रता भारत को विभाजन की ओर ले गया। परिणामस्वरूप भारत दो भागों में विभाजित हुआ, जो वर्तमान में भारत और पाकिस्तान के रूप में देखा जाता है।

पाकिस्तान, बांग्लादेश एवं भारत एक साझा इतिहास के भागीदार माने जाते हैं, इसलिए इतिहास की इस समय रेखा के अंतर्गत सम्पूर्ण भारतीय उपमहाद्वीप के इतिहास की झलक है। वर्तमान बांग्लादेश पाकिस्तान का एक प्रांत था। जिसका नाम पूर्वी पाकिस्तान था। कई सालों के संघर्ष और पाकिस्तान की सेना के अत्याचार तथा बांग्लभाषियों के दमन के विरोध में पूर्वी पाकिस्तान के लोग क्रांतिकारी आन्दोलन पर उतर आए। इसे मुक्ति संग्राम भी कहा जाता है। यह युद्ध 24 मार्च 1971 से 16 सितम्बर तक चला, जिसमें भारत का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। इस रक्तरंजित युद्ध माध्यम से बांग्लादेश पश्चिमी पाकिस्तान (पाकिस्तान) से स्वाधीनता प्राप्त की। इस ऐतिहासिक जीत को 'विजय दिवस' के रूप में मनाया जाता है। बांग्लादेश की आजादी की लड़ाई के दौरान मुक्तिवाहिनी का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। इस तरह 16 दिसम्बर 1971 को दुनिया के मानचित्र पर एक नए राष्ट्र का उदय हुआ। जिसे हम बांग्लादेश के नाम से जानते हैं।

हिंदी साहित्य जगत में अपनी विशिष्ट पहचान बनाने वाली अलका सरावगी कहानीकार और उपन्यासकार के रूप में जानी जाती हैं। अलका सरावगी साहित्य अकादमी पुरस्कार से सम्मानित हो चुकी हैं। इनका बहुचर्चित उपन्यास 'कलिकथा वाया बाइपास' है जो अनेक भाषाओं में अनुदित है। इसके

अतिरिक्त 'शेष कादंबरी', 'कोई बात नहीं', एक ब्रेक के बाद' आदि प्रसिद्ध उपन्यास हैं। अलका सरावगी एक सशक्त कहानीकार के रूप में स्थापित हो चुकी हैं। उनका पहला कहानी संग्रह वर्ष 1996 में 'कहानी की तलाश' में प्रकाशित हुई तथा दूसरा कहानी संग्रह 'दूसरी कहानी' के नाम से जानी जाती हैं। अलका सरावगी को अपने पहले उपन्यास 'कलिकथा वाया बाइपास' के लिए 2001 में साहित्य अकादमी पुरस्कार और 'श्रीकांत वर्मा पुरस्कार' से नवाजा गया है।

हमारे देश में आजादी के बाद विभाजन एवं विस्थापन का इतिहास अत्यंत वेदनापूर्ण रहा है जिसकी निर्मम तस्वीर हमें विभिन्न कहानियों एवं उपन्यासों में देखने को मिलती है। देश के पूर्वी हिस्से की बड़ी आबादी की त्रासदी यही रही है कि उसे एक बार नहीं, अपितु दो-दो बार विभाजन के दंश को झेलना पड़ा। विभाजन के चलते लाखों बिखरती जिंदगियाँ हैं, उनकी घृणायें हैं तथा उनसे जुड़ी अनेक भयावह कहानियां हैं जिसे कोई याद नहीं करना चाहता, उन्हीं गुमनाम कहानियों को दर्ज करता है। अलका सरावगी का उपन्यास 'कुलभूषण का नाम दर्ज कीजिए' जिसके बहाने बांग्लादेश के कुष्टिया जिले से कोलकाता तक एवं आगे के पलायन के दर्द को पिरोया गया है।

यह उपन्यास कुलभूषण की ही कथा नहीं, बल्कि अथाह वेदना की अभिव्यक्त करता है जो बांग्लादेश के कुष्टिया जिले से रिफ्यूजी बनकर कोलकाता आया है। नाम छिपा कर जीना उसकी नियति है। पहले 'कुलभूषण' से भूषण बना फिर 'गोपाल चंद्र दास' फिर भी वह अपना वजूद बचाए रखना चाहता है। इस कहानी में कई उपकथाएं हैं, जो राजनीति, भाषा, समाज, तथा संस्कृति से जुड़े बहुत से यथार्थ प्रश्नों को प्रभावी ढंग से रेखांकित करती है।

इस कहानी में बांग्ला ही नहीं बल्कि, मारवाड़ी संस्कृति को भी बखूबी पेश किया गया है। इसमें घृणा-सांप्रदायिकता, मार-काट, भूख, सड़ी लाशें और भी भयंकर स्मृतियों के साथ-साथ प्रेम कथाएं, प्रेम के रंग विद्यमान हैं। यह उपन्यास सिर्फ बंटवारे की राजनीति की कहानी नहीं, कहता बल्कि यह परिवारों के

भीतर के विस्थापन, बंटवारे तथा अपने लोगों के ही अंदर दरारों की दास्तान भी कहता है। उपन्यास के नायक कुलभूषण को अपना पैतृक घर छोड़कर कोलकाता अपने भाइयों के पास आना पड़ता है, जहां उसके साथ शरणार्थियों जैसा व्यवहार किया जाता है। फिर भी वह एक बंगाली लड़की से विवाह कर दूसरी बंगाली पहचान के साथ बस जाता है। कुलभूषण अपने मित्र श्यामा से भी खुलकर बातें नहीं कर सकता और अंत में वही श्यामा बंदूक उठाता है, जो यह दर्शाता है कि वह धर्म के खून-खराबे से तंग आ चुका है। दंगों ने इंसान को इंसान नहीं रहने दिया और अंततः कुलभूषण को मालूम होता है जिसे हम विस्थापन कहते हैं उसकी कथा तो समाप्त ही नहीं हुई है बल्कि वह अब तक जारी है।

अलका जी का यह उपन्यास लीक से हटकर है और यह हमें यथार्थ से परिचित कराता है कि सांप्रदायिकता की आग न केवल देश को जलाती है, बल्कि नागरिकों की आने वाली अनेक पीढ़ियों तक को झुलसा देती है। हिंदी उपन्यास लेखिकाओं की लंबी सूची में अलका सरावगी जी का विशिष्ट स्थान है। इनका कथा साहित्य मध्य वर्गीय समाज के साथ देश के अनेक पहलुओं को चित्रित करता है। कोलकाता शहर में जन्मी अलका सरावगी जी ने विवाह के पश्चात कर्तव्यनिष्ठा के साथ एक ओर घर गृहस्थी को निभाती रहीं तो दूसरी ओर उन्होंने साहित्य के क्षेत्र में भी अपनी अलग पहचान बनाई।

अलका सरावगी की कथा लेखन के साथ-साथ पत्रकारिता में भी विशेष रुचि रही है। स्त्रियों के मुद्दों पर उनके कई लेख प्रतिष्ठित पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित हुए हैं। इन्होंने अपने आसपास मानव जीवन के बढ़ते तनाव तथा संघर्षों को अपनी प्रतिभा एवं अनुभव से अपने साहित्य में प्रस्तुत किया है। भूमंडलीकरण के इस दौर में विगत दो-तीन दशकों में उपन्यास साहित्य के क्षेत्र में जो बदलाव के मंजर नजर आए हैं वह सचमुच समाज की परत दर परत खोल रहे हैं। आज के मल्टीमीडिया के दौर में भी गरीबी, बेरोजगारी, शोषण, अत्याचार, विस्थापन, अनैतिकता, भ्रष्टाचार जैसी अन्य समस्याओं ने अपने पैर पसार रखे हैं। वर्तमान दशकों में जो साहित्य लिखा जा रहा है वह इन्हीं सब विषयों का चिट्ठा प्रस्तुत कर रहा है।

ये घटनाएं कहीं लेखक का भोगा हुआ यथार्थ होती हैं, तो कहीं आंखों देखा सच। अलका सरावगी जी का उपन्यास 'कुलभूषण का नाम दर्ज कीजिए' ने इसी कड़वे सच से अवगत कराया है।

राजनीतिक विस्थापन के तले विस्थापितों के हर सपने को कुचला जा रहा था। जीवन में एक नए सुअवसर की प्राप्ति के लिए लोगों ने नए राष्ट्रों व प्रदेशों की ओर प्रस्थान किया, परंतु भारी सांस्कृतिक अंतर होने के कारण विस्थापित जन सदैव अयाचित के रूप में रह जाते हैं। भीड़ में भी अकेले रहने के लिए अभिशप्त विस्थापित जन या समूह समस्त सुविधाओं के मध्य में रहते हुए भी जीवन भर परायेपन के एहसास को भोगते रहते हैं।

विस्थापन एक कारुणिक परिघटना के रूप में दुनिया भर में गहरी सोच का विषय बन गया है। आजकल यह साहित्य का ज्वलंत विषय है । समकालीन हिंदी उपन्यासकारों ने विस्थापन से जुड़ी समस्याओं और उसके विविध रूपों व प्रभावों को अपनी रचनाओं का विषय बनाया है। दुनिया भर में समय और समाज की समस्याओं, आकुलताओं, विसंगतियों, चुनौतियां जैसे जटिलताओं को व्यक्त करने के लिए उपन्यास एक सफल और समर्थ माध्यम है।

विस्थापितों के प्रति सहानुभूति विस्थापन के प्रति गंभीर आक्रोश, चिंतन तथा व्यापक अध्ययन से अलका सरावगी कुलभूषण के व्यक्तित्व को बनाती हैं। समाज के भीतर विद्यमान विसंगतियों पर अलका सरावगी अपने साहित्य के माध्यम से चोट करती हैं। इन्होंने विभिन्न राजनीतिक विषयों को उठाकर वर्तमान राजनीति की विडंबनाओं को प्रस्तुत किया है। वे राजनीति के जाल में फंसे हुए विभाजन का यथार्थ चित्र खींचती हैं। ऐसे दौर में विभाजन की समस्या को समझने में अलका सरावगी हमारी मदद करती हैं। अलका सरावगी निश्चित रूप से बड़ी कथाकार हैं जो विस्थापन जैसे ज्वलंत मुद्दों पर लिखकर हमारे समक्ष विस्थापितों के दर्द को गहरे से बयां करती हैं। अलका सरावगी अपने उपन्यास 'कुलभूषण का नाम दर्ज कीजिए' से देश की राजनीति, विभाजन की समस्या के विभिन्न आयाम को हमारे सामने लाती हैं। इस

उपन्यास के माध्यम से विस्थापन के दर्द और उनसे जुड़े पारिवारिक विस्थापन के तनाव को देखा जा सकता है।